>

Title: Need to formulate schemes for the welfare of SCs/STs residing in plateau region of Bihar, Jharkhand and Chhattisgarh.

श्री महाबली सिंह (काराकाट): सभापति महोदय, आजादी के 63 साल गुज़रने के बाद भी देश के पठारी इलाकों में रहने वाले अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लोगों की स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हो पाया है। आज वे लोग भूखे-प्यासे, नंगे, पेड़ों के नीचे जीने को मजबूर हैं। खासकर बिहार झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के पठारी इलकों में रहने वाले लोगों की स्थिति बद से बद्तर होती जा रही है। वहां के लोग मरने के कगार पर हैं। पहले वहां के लोग सूखी लकड़ी काटकर, तेंदू की पत्ती से अपना जीवन-यापन करते थे। लेकिन सरकार द्वारा इन पर प्रतिबंध लगाने के बाद आज वे लोग मरने के कगार पर हैं। आज वहां पर लोग खाने के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। केंद्र की योजनाएं आज भी उन तक नहीं पहुंच पा रही हैं। जिसके कारण लाचार होकर वे लोग नक्सली गतिविधियों में शामिल हो रहे हैं। आज वहां के जवान बेरोज़गारी और गरीबी के कारण नक्सल गतिविधियों में शामिल होते जा रहे हैं। इसी कारण आज बिहार, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के इलाकों में नक्सली गतिविधियां दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही हैं। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूँ कि अगर सरकार बिहार और झारखण्ड में नक्सल गतिविधियों को रोकना चाहती है, इसको हथियार से नही रोका जा सकता है, उसको रोकने के लिए सरकार को यह जानना पड़ेगा कि इसके पीछे कारण क्या है? क्योंकि किसी न किसी कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है। अगर कोई कारण है, तो उसका निवारण भी होता है। जहां पर नक्सल गतिविधियां बढ़ रहीं हैं, वहां जो लोग बेरोज़गार हैं, उनको रोज़गार मुहैया कराया जाए, वहां पर विद्यालय खोले जायें।

यह दुर्भाग्य की बात है कि बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ का जो इलाका है, पांच सौ किलोमीटर में है और वहां एक भी केन्द्रीय विद्यालय नहीं है। आज भी वहां लोग नदी, नाले का पानी पीते हैं। आज भी उन्हें पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं हो रहा है। जिन्हें पीने का साफ पानी नहीं मिल रहा है, खाने की बात तो दूर है।

सभापति महोदय : आपने अपनी बात कह दी है।

श्री महाबली सिंह : महोदय, गर्मी के दिनों में पानी के लिए लोग तीन-तीन, चार-चार किलोमीटर दूर पानी लेने के लिए जाते हैं और गन्दा पानी पीते हैं। वहां की ऐसी स्थिति है।

सभापति महोदय : अब आप अपनी बात संक्षिप्त कीजिए।

श्री महाबली सिंह : महोदय, आजादी के 63 साल गुजर रहे हैं। हमारा ख्याल है कि यह सरकार अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति पर ज्यादा ध्यान देती है, लेकिन उनके पास आज पीने का पानी नहीं है, खाने की बात तो बहुत दूर है।

महोदय, हम आपके माध्यम से सरकार से एक बार आग्रह करना चाहते हैं कि अगर बढ़ती हुई नक्सलवादी गतिविधियों को रोकना है तो वहां बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराया जाये, वहां विद्यालय खोले जायें, उन लोगों के लिए खाने की व्यवस्था की जाये। इन्हीं बातों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं।